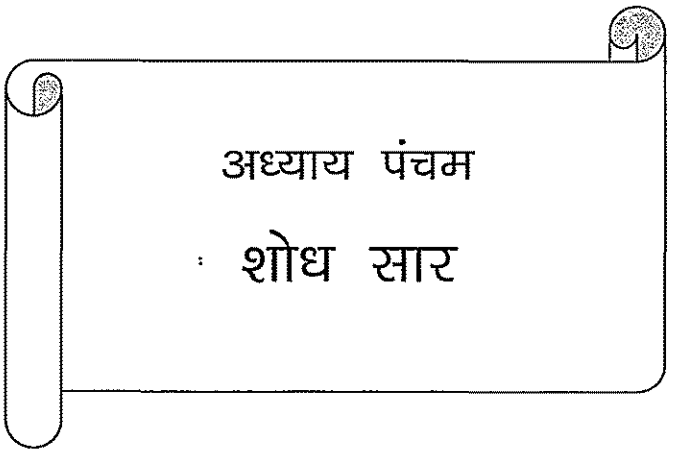

अध्याय पंचम

शोध सार

अध्याय पंचम
शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

सारांश किसी भी अध्ययन को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है। जिसके द्वारा अध्याय को संक्षिप्त व सरल रूप में समझा जा सकता है। इस अध्याय में लघुशोध का सारांश एवं अध्याय-4 में दिये गये प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही साथ संबंधित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने के लिये सुझाव भी देने का प्रयास किया गया।

5.2 समस्या कथन

"कक्षा 10वीं के मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों का शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक विषय क्षेत्रों में उपलब्धि का अध्ययन"

5.3 शब्दाबलियों की परिभाषा व स्पष्टीकरण

- **मुक्त विद्यार्थी** :ऐसे विद्यार्थी जो स्वनिर्देशित होते हैं, तथा स्वसंचालन के माध्यम से परिस्थितियों पर कम समय में नियंत्रण पा लेते हैं व उनमें मानव स्वभाव की अच्छाई निहित होती हैं। इन विद्यार्थियों के परवरिश ऐसे वातावरण में होती है जहाँ उन्हें स्वसंचालन का अधिकार प्रदान किया जाता है, तथा बाहरी मानसिक व दैहिक अनुशासन नहीं होता हैं।
- **अमुक्त विद्यार्थी** : ऐसे विद्यार्थी जिनकी परवरिश ऐसे वातावरण में हुई हो जहाँ मानसिक व दैहिक अनुशासन हो, जिसके कारण वह अनुकूलित, अनुशासित एक साँचे में ढ़ला हुआ (पुराने रिति-रिवाज या मान्यताओं का अनुसरण करने वाला) दमित (महत्वकांक्षाओं पर प्रतिबंध) हो जाता है, अमुक्त विद्यार्थी कहलाते हैं।

- **शैक्षिक विषय क्षेत्र** :शैक्षिक विषय क्षेत्रों में विषय आधारित विशिष्ट क्षेत्रों को शामिल किया जाता हैं। इस विषय क्षेत्र में विद्यार्थी के संज्ञानात्मक विकास पर ध्यान दिया जाता हैं, तथा निम्न विषयों का अध्ययन कराया जाता हैं। उदाहरण– विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित, हिन्दी, अंग्रेजी।
- **सह–शैक्षिक क्षेत्र** :सह–शैक्षिक विषय क्षेत्रों में जीवन कौशल पाठ्य–सहगामी गतिविधि, अभिवृत्ति एवं मूल्यों को शामिल किया जाता हैं। ऐसे विषय क्षेत्रों के माध्यम से विद्यार्थी के शारीरिक व भावनात्मक पक्ष के विकास पर बल दिया जाता हैं। उदाहरण– खेल गतिविधियाँ, सांस्कृतिक गतिविधियाँ तथा लेखन संबंधी गतिविधियाँ आदि।

5.4 अध्ययन के उद्देश्य

1.मुक्त तथा अमुक्त विद्यार्थियों की पहचान करना।

2.मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

3.मुक्त तथा अमुक्त विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

5.5 परिकल्पनाएँ

1.कक्षा 10वीं के मुक्त तथा अमुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2.कक्षा 10वीं के मुक्त तथा अमुक्त विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.6 अध्ययन की सीमाएँ

1. प्रस्तुत शोध कार्य म.प्र. राज्य के भोपाल संभाग के विद्यालयों बहुउद्देश्यीय प्रदर्शनीय विद्यालय, आर.आई.ई. व जय हिन्दी कान्वेट विद्यालय नेहरू नगर पर आधारित हैं।
2. प्रस्तुत शोध कार्य समरहिल नामक पुस्तक के द्वारा उद्वेलित विचारधारा पर आधारित है।
3. प्रस्तुत शोध व्यक्तिगत विचारधारा पर आधारित हैं।

5.7 शोध के न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने म.प्र. राज्य के भोपाल संभाग के दो स्कूलों को चयन किया गया। जिसमें एक स्कूल शासकीय व एक अशासकीय विद्यालय हैं। तथा प्रत्येक विद्यालय से 60-60 बच्चों का चयन किया गया। अतः इस तरह 120 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

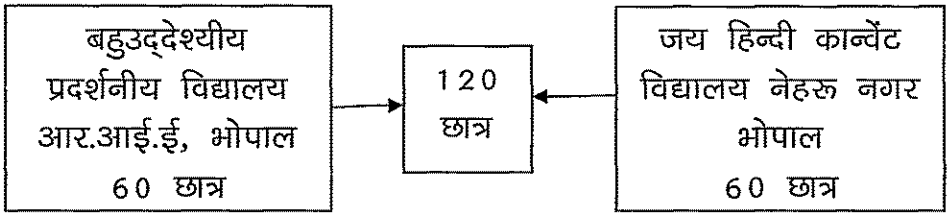

5.8 शोध के चर

निम्नलिखित चरों का उपयोग प्रस्तुत अध्ययन के लिये किया गया है।

1. स्वतंत्र चर - मुक्त बालक, अमुक्त बालक
2. आश्रित चर - शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक उपलब्धि

5.9 शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत लघुशोध में अनुसंधानकर्ता द्वारा मार्गदर्शक के निर्देश में प्रश्नावली का निर्माण किया गया। इस प्रश्नावली में 50 प्रश्न शामिल है, इन प्रश्नों को दो भागों भाग-1 व भाग-2 में विभाजित किया गया है। तथा इन भागों में बालक के मुक्त तथा अमुक्त प्रवृत्ति से संबंधित प्रश्न शामिल है तथा अलग से एक उत्तर पत्रिका जिसमें सही व गलत के संकेत में दर्शाने वाले खण्ड हैं।

प्रत्येक सही उत्तर का एक अंक है तथा जिस खण्ड में ज्यादा अंक होते है विद्यार्थियों को उस श्रेणी में वर्गीकृत कर दिया जाता है।

तालिका 5.1

प्रश्नावली की संरचना का विवरण

प्रश्नावली		कुल
मुक्त	अमुक्त	
25	25	50

5.10 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी विधि

शोध समस्या से संबंधित प्रदत्तों के सारणीयन करने के उपरांत उनसे उचित परिणाम प्राप्त करने के लिये उपयुक्त सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है। जिससे निष्कर्षो तथा परिणामों की विश्वसनीयता एवं वैद्य रूप में प्रस्तुत किया जा सकें।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु **"टी"** परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

5.11 शोध के परिणाम

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सह-शैक्षिक उपलब्धि के विश्लेषण के पश्चात् निम्नलिखितपरिणामप्राप्त हुये-

1. 120 विद्यार्थियों में से मुख्य विद्यार्थी की संख्या 83(69%) तथा अमुक्त विद्यार्थी की संख्या 37(31%) हैं। मुक्त विद्यार्थियों की संख्या अमुक्त विद्यार्थी की संख्या से लगभग दो गुना है।
2. अमुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मुक्त विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है।
3. मुक्त विद्यार्थी की सह-शैक्षिक उपलब्धि अमुक्त विद्यार्थियों की सह-शैक्षिक उपलब्धि से अधिक है।

5.12 निष्कर्ष

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सह–शैक्षिक उपलब्धि के विश्लेषण के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्षप्राप्त हुये–

1. मुक्त विद्यार्थियों की संख्या 83 अमुक्त विद्यार्थी की संख्या 37 से लगभग दो गुनी है।

2. मुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान (57.73) अमुक्त विद्यार्थियों के मध्यमान (63.92) से कम हैं। अतः अमुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मुक्त विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक हैं।

3. अमुक्त विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान (60.82) मुक्त विद्यार्थियों के मध्यमान (70.59) से कम हैं। अतः मुक्त विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक उपलब्धि अमुक्त विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक हैं।

5.13 सुझाव

शिक्षकों व अभिभावकों हेतु सुझाव

बच्चों में बाल्यावस्था से ही मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक और भाषिक विकास की प्रक्रिया शुरू होती है और वह किशोर अवस्था में जाकर स्थिर हो जाती है। अगर इस समय बच्चों की परवरिश के दौरान उन्हें हम ऐसा वातावरण उपलब्ध करायें जहाँ वे स्वतंत्रतापूर्वक अपने क्रियाकलॉपों का प्रतिपादन कर सकें तो वे वातावरण के साथ समायोजन करके अपनी रूचि को तलाश पायेंगे व निर्णय लेने में समर्थ होगें।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने पाया कि अधिकांश मुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि औसत से ऊपर पायी गई जो इस बात का सूचक है कि विद्यार्थी अपनी प्रकृति अधिगम–शैली से बेहतर तरीके से सीखते है व उनमें सामाजिक कौशलों का विकास अधिक पाया गया, जो उनके भावी जीवन के लिये उपयोगी होता है। बच्चों को स्वतंत्रतापूर्वक सीखने देने से उनमे सामाजिक कौशलों का विकास अधिक होता है, जिससे विद्यार्थी अपने वातावरण के साथ बेहतर समायोजन कर पाते है।

अतः विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास के साथ भावात्मक विकास पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए, अर्थात् पाठ्य सहगामी व सामाजिक कौशलों का विकास किया जाना चाहिए। गोलमेन का यह कथन कि व्यक्ति के जीवन में सफलता अर्जित करने में 20 प्रतिशत मानसिक बुद्धि व 80 प्रतिशत भावनात्मक बुद्धि का योगदान रहता है, इस बात का समर्थक है।

5.14 भावी शोध हेतु सुझाव

1. लिंग के आधार पर मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक तथा सह-शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।
2. मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों के अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन।
3. मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन।
4. मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों के साथ सह संबंध का अध्ययन।
5. मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों का खेल संबंधी गतिविधियों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।